विचार बिन्दु

पूरे यत्न से इतिहास की रक्षा करनी चाहिए, इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने से विनाश निश्चित है। –महाभारत

साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

इधर साहित्य की दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बडी हलचल पैदा कर रखी है। बहुत सारे लेखकों और साहित्यानुरागियों को लगता है कि यह एक नई महामारी है जो कुछ समय में सब कुछ को ख़त्म कर देगी। लेखक के पास लिखने-करने को कुछ रहेगा नहीं और पाठक को जो भी मिलेगा वह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा रचित होगा। ऐसा मानने वाले बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिन्होंने केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नाम सुना है और जिन्हें अभी तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न पक्षों को जानने समझने का मौका नहीं मिला है। आज जो प्रतिक्रिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर हो रही है, कुछ-कुछ वैसी ही प्रतिक्रिया कुछ दशक पहले कम्प्यूटर को लेकर भी हुई थी। लेकिन हम पाते हैं कि वे आशंकाएं अधकचरी थीं और आज स्थिति यह है कि कम्प्यूटर हमारी ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा बन गया है और उसने हमें जितना नुकसान पहुंचाया है उससे ज़्यादा सुविधाएं भी हमें प्रदान की हैं। यह तो समय ही बताएगा कि क्या इतिहास अपने आप को दुहराएगा, अभी तो हम थोड़ा गहराई में जाकर यह विचार कर सकते हैं कि जितनी जानकारी अभी हमें सुलभ है उसके अनुसार कृत्रिम बुद्धि साहित्य को कैसे प्रभावित करने जा रही है। यहीं यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि तकनीक बहुत तेज़ी से बदल और विकसित हो रही है, इसलिए यह भविष्यवाणी करना कि कल, या अगले कुछ वर्षों में ऐसा हो जाएगा, ख़तरे से खाली नहीं है। बहुत सम्भव है कि कल तकनीक कोई और ही रूप ले ले।

अभी साहित्य से जुडे लोग इस बात को लेकर आशंकित हैं कि भविष्य में कविता, कहानी, उपन्यास सब कुछ कृत्रिम बुद्धि रच देगी। यह आशंका एकदम तो निर्मूल नहीं है। अभी जितने साधन हमें सुलभ हैं उनके द्वारा भी ऐसा किया जाना सम्भव हो चुका है। आप कृत्रिम बुद्धि के किसी टूल को ठीक से निर्देश (कमाण्ड) दें तो पलक झपकते ही आपके सामने तदनुरूप रचित 'चीज़' हाज़िर हो जाएगी। आप चैटजीपीटी को कविता लिखने का आदेश दे सकते हैं और आपको कविता मिल जाएगी। आप कुछ बिंदु दें तो कहानी भी मिल सकती है, और कदाचित उपन्यास भी। अब अगर मैं इस तरह से कुछ रच कर अपने नाम से प्रकाशित करवा लूं तो? मैं तो बग़ैर रचनात्मक प्रतिभा के रचनाकार बन जाऊंगा। क्या पता उस निर्मिति को कोई पुरस्कार भी मिल जाए! वह रचना मेरी नहीं है, यह दावा कौन करेगा? कृत्रिम बुद्धि तो दावा करने आएगी नहीं! इसे नैतिक प्रश्न भी मान सकते हैं! अभी तो कॉपीराइट कानून में भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं है, क्योंकि कानून पहले बना था, समस्या बाद में उत्पन्न हुई है। यह भी सोचिये कि पहले जिस तरह बहुत सारे प्रकाशक छद्म लेखन करवाते थे क्या वैसे ही अब बहुत सारे प्रकाशक कृत्रिम लेखन नहीं करवाने लग जाएंगे? अख़बार और पत्र पत्रिकाओं के संपादक भी लेखक पर निर्भर रहने की बजाय 'आत्म निर्भर' नहीं हो जाएंगे? इसका ॲसर जहां लेखकों की आजीविका, उनकी महत्ता और उनकी रचनात्मकता पर पड़ेगा, वहीं वे लोग जो साहित्य से वैचारिक ऊर्जा ठाहण करते हैं, उनकी भी तो हानि होगी।

लेकिन ये सब तो नकारात्मक बातें हैं। क्या कृत्रिम बुद्धि से साहित्य का और साहित्यकारों का कोई भला नहीं होगा? कल्पना कीजिए कि आप एक उपन्यास लिखना चाहते हैं। एक स्थूल-सी रूपरेखा आपके मन में है। आप उसी रूपरेखा को विकसित करके एक उपन्यास बनाना चाहते हैं और इसके लिए कृत्रिम बुद्धि से मदद मांगते हैं। आपको कुछ बिंदु सुझा दिए जाते हैं। आप उन्हें विकसित करके कथा का रूप देते हैं। आपका श्रम कुछ कम हो गया है और इसका लाभ आप अपनी कथा को संवारने में उठाते हैं। यह तो बुरी बात नहीं है। मनुष्य अपने श्रम को बचाने के लिए बहुत सारे प्रयास हमेशा ही करता रहा है। कल तक हम पहाड़े रटते थे आज वही काम कैलक्युलेटर से करा लेते हैं। इसी तरह अगर आप अपने सोचने का कुछ बोझ कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर डाल देते हैं तो मुझे इसमें कोई बुराई नज़र नहीं आती। आप एक कहानी लिखते हैं और आपको समझ नहीं आ रहा कि उसका अंत कैसे किया जाए! आप कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सुझाव मांगते हैं और फिर उसके द्वारा दिये गए सुझावों में से किसी सुझाव को आधार बना कर अपनी कहानी को पूर्णता की तरफ ले जाते हैं, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। सारी बात का सार यह कि आप कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सहायता के लिए करें, न कि पूरी तरह उसी पर निर्भर हो जाएं। ऐसा करना पूरी तरह आपकी नैतिकता पर निर्भर करेगा।

अब से कुछ बरस पहले मशीनी अनुवाद हम सबके लिए हास्य और उपहास का विषय हुआ करता था, क्योंकि मशीन से हासिल किए गए अनुवाद अटपटे और ख़ासे मनोरंजक होते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब मशीनी अनुवाद लगभग निर्दोष होते हैं। रोज़मर्रा के काम की अभिव्यक्तियां बहुत अच्छी तरह से एक से दूसरी भाषा में रूपांतरित हो जाती हैं। बेशक मनुष्य अभी भी उत्कृष्ट है, लेकिन अब मशीनी अनुवाद भी निकृष्ट नहीं रह गया है। तो इसी तरह सर्जनात्मकता के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास करेगी, यह माना जा सकता है।

शायद हममें से बहुतों को इस बात की जानकारी नहीं है कि ये पंक्तियां लिखते समय भी हमारी अपनी भाषा में ऐसे अनेक टूल सुलभ हो गए हैं जो साहित्य सृजन में मददगार हैं। उदाहरणार्थ एक टूल है शायर एआई जिसे हिंदी कविताओं के डेटाबेस पर तैयार किया गया है और इसकी मदद लेकर आप पारंपरिक हिंदी-उर्दू शैली में शेर वगैरह तैयार कर सकते हैं। इसी का एक और रूप हिंदी शायरी जनरेशन मॉडल्स भी है जो पारंपरिक शैली की ग़ज़ल तैयार कर सकता है। इसी तरह एक टूल है एआईपोयम जनरेटर जहां आप कोई विषय देकर कविता लिखवा सकते हैं। आप कहें कि मुझे प्रेम पर कविता चाहिए, तो यह टूल आपको एक भावनात्मक कविता बनाकर दे देगा। उसमें आप कोई सुधार चाहेंगे तो यह सुधार भी कर देगा। इससे यह न समझ लें कि एआई केवल कविता और शायरी ही कर सकता है, राइट क्रीम्स स्टोरी जनरेटर बच्चों के लिए ऐसी कहानी तैयार करके दे देता है जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और नैतिकता का संदेश देने वाली हो। पैराफ्रेस टूल का शॉर्ट स्टोरी जनरेटर भी छोटी कहानियां तैयार कर देता है। जानकारों का कहना है कि बहुत सारे लेखक, जो तकनीक के मामले में अग्रगामी हैं, चैटजीपीटी, जैस्परएआई या ग्रोक की मदद लेकर कभी कहानी का प्लॉट प्राप्त कर रहे हैं या कभी उसका विकास कर रहे हैं या कभी अपने लिखे को परिष्कृत कर रहे हैं। अनुवाद के मामले में तो एआई की मदद अब सर्व स्वीकार्य है।

निश्चय ही अभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी में काम करने में उतनी दक्ष नहीं है जितनी दक्ष वह अंग्रेज़ी या कुछ अन्य भाषाओं में काम करने में है। इसलिए स्वभावतः हम हिंदी वाले उससे अधिक लाभ नहीं ले पा रहे हैं। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भी बाकायदा प्रशिक्षित किया जाता है। मज़ाक में कहूं तो यह कि अभी उसने हिंदी ठीक से सीखी नहीं है। लेकिन अगर हम चाहेंगे तो वह जल्दी ही सीख जाएगी। इस बात का बहुत बढ़िया उदाहरण अनुवाद की दुनिया से दिया जा सकता है, अब से कुछ बरस पहले मशीनी अनुवाद हम सबके लिए हास्य और उपहास का विषय हुआ करता था, क्योंकि मशीन से हासिल किए गए अनुवाद अटपटे और ख़ासे मनोरंजक होते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब मशीनी अनुवाद लगभग निर्दोष होते हैं। रोज़मर्रा के काम की अभिव्यक्तियां बहुत अच्छी तरह से एक से दूसरी भाषा में रूपांतरित हो जाती हैं। बेशक मनुष्य अभी भी उत्कृष्ट है, लेकिन अब मशीनी अनुवाद भी निकृष्ट नहीं रह गया है। तो इसी तरह सर्जनात्मकता के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास करेगी, यह माना जा सकता है।

मेरा सोच तो यह है कि हमें अनावश्यक और अतार्किक आशंकाओं से बचना चाहिए। तकनीक का विकास हमेशा ही नुकसानदायक नहीं होता है। और सारी बात का सार तो यह है कि आप उसे कैसे बरतते हैं! आप उससे सहायता लेते हैं और उस प्राप्त सहायता को अपनी बुद्धि के स्पर्श से परिष्कृत करते हैं तो यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन अगर आप एकदम निठल्ले हो जाएं और सब कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर ही छोड़ दें तो ऐसा करना आपकी ग़लती होगा और इसके लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दोष नहीं दिया जाना चाहिए। जैसा मैंने प्रारम्भ में कहा, तकनीक बहुत तेज़ी से परिवर्तित और विकसित हो रही है, अतः आने वाला समय ही बताएगा कि वह क्या रूप लेती है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अमानक दवाओं से जीवन से खिलवाड़

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

भले ही यह दावा किया जाता है कि दवाओं की जांच के लिए जो सेंपल लिए जाते हैं उनमें से केवल 3 प्रतिशत दवाएं निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरती पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दवा के एक भी नमूने में निर्धारित मात्रा व संयोजन में कंपोनेंट नहीं है तो यह स्वीकार नहीं होनी चाहिए। पिछले कुछ माहों के समाचारों का ही विश्लेषण किये जाये तो मध्यप्रदेश राजसथान सहित देश के कई हिस्सों में खांसी की दवा के चलते बच्चों की जान ना केवल सांसत में आई बल्कि कुछ बच्चों को तो जिंदगी से हाथ धोना पड़ा। हांलाकि लीपापोती के नाम पर यह सफाई दी गई कि दवा डाक्टर ने नहीं लिखी थी या चिकित्सालय से दवा नहीं दी गई थी। सवाल यह है कि अमानक दवाएं तैयार कर जीवन से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई नहीं होना उनके हौसले को ही बढ़ाती है। माना जाता है कि नकली पेस्टीसाइड बनाने व बेचने वालों के लिए सख्त सजा का प्रावधान है तो फिर दवाओं के सेंपल फेल हो जाने पर उस बेच की दवाओं को बाजार से हटाने की बात तो कर दी जाती है पर किसी दवा निर्माता को दवाओं के सेंपल विफल होने पर सजा मिलने के समाचार लगभग दिखाई ही नहीं देते।

गत पांच सालों में 14 हजार से अधिक दवाओं के सेंपल विफल हुए हैं। मजे की बात यह है कि इनमें से अधिकांश बुखार, खांसी के साथ ही ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी गंभीर बीमारी के भी है। अब कल्पना की जा सकती है कि बीपी या शुगर के बीमार पर अमानक दवाओं का क्या असर होता होगा या हो सकता है। सामान्य से गंभीर बीमारी की दवाओं के सेंपल विफल होना इस बात का साफ संकेत है कि दवा निर्माताओं में ना तो मरीजों के प्रति गंभीरता है और ना ही किसी कानूनी कार्रवाई का डर। यह तो वह आंकड़ें है जो सामने आ जाते हैं नहीं तो बाजार में आने वाली दवाओं के सभी के सभी बैच के सेंपल जांच के लिए लेना या जांच करना संभव भी नहीं तो व्यावहारिक भी नहीं लगता। ऐसे में अमानक पाये जाने पर कठोर कार्रवाई लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ करने वालों में भय व सबक सीखा सकती है।

दवाओं के निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरने के साथ ही जीवनदायिनी दवाओं के तेजी से बेअसर होना भी एक समस्या होती जा रही है। इसका एक बड़ा कारण जहां एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक सेवन है तो दूसरा कारण दवाएं लेने के तौरतरीके से अनविज्ञ होना या फिर जानबुझकर लावपरवाही बरतने के साथ ही खान पान से जुड़ी गलतियां भी है। डॉक्टरों की भाषा में बात करें तो एएमआर यानी कि एंटी माइक्रोबाइल रेजिस्टेंस का चिंतनीय खतरा हो गया है। देश-विदेश के चिकित्सक एएमआर को वैश्विक महामारी का नाम देने लगे हैं। देखा जाए तो आज सबसे अधिक मौत का कारण दवाओं का बेअसर होना है। कोरोना के बाद तो एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग बहुत अधिक बढ़ा है। दरअसल कोरोना के बाद जहां एक और आम व्यक्ति स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक सजग हुआ है तो एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग भी बढ़ा है।

सर्दी, जुकाम, खांसी आदि वायरल बीमारियों में यदि भारत की बात की जाए तो 95 प्रतिशत तक एंटीबायोटिक दवाओं को ईलाज में शामिल किया जा रहा है। यह 95 प्रतिशत का आंकड़ा अतिशयोक्ति पूर्ण भले ही हो सकता है पर इसमें कोई दो राय नहीं कि चिकित्सकों द्वारा एंटीबायोटिक दवाएं धडल्ले से लिखी जा रहा है। यह तो तब है जब मेडिकल से जुड़े विभिन्न मंचों व शोध निष्कर्षों में यह खुलासा हो चुका है कि एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य को नुकसान ही पंहुचाने लगा है तो दूसरी और बैक्टिरिया में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होने से दवाओं का असर कम होने लगा है।

दवाओं के तेजी से बेअसर होने को लेकर देष-दुनिया के स्वास्थ्य विशेषज्ञ अत्यधिक चिंता में हैं। मेडिकल से जुड़े जर्नल द लैसेंट में इस संबंध में एक के बाद एक चेतावनी भरे लेख सामने आ रहे हैं। यहां तक कि एएमआर को मेडिकल इंमरजेंसी के रुप में देखा जाने लगा है। दरअसल कोरोना के बाद लोग थोड़ा सा स्वास्थ्य खराब होते ही डॉक्टर की शरण में जाने को वरियता देने लगे है। यह अच्छी बात भी है पर जिस तरह से कोरोना के दौरान और उसके बाद एंटीबायोटिक का उपयोग अधिक बढ़ा है वह चिंतनीय हो गया है। हालात यहां तक हो गए हैं कि प्रति व्यक्ति 30 प्रतिषत अधिक मात्रा में एंटीबायोटिक का उपयोग होने लगा है। दवाओं का बेअसर होने का सीधा सीधा असर किडनी, लीवर, ब्रैन, हार्ट आदि प्रभावित होने लगे हैं। इन गंभीर बीमारियों में एंटीबायोटिक दवाओं का असर कम होने लगा है।

इसे सकारात्मक ही माना जाएगा कि आज लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग हुए हैं। जरा सा स्वास्थ्य गड़बड़ाने लगते ही लोग दवाओं का सहारा लेना आरंभ कर देते हैं। ऐसे में दवाओं की गुणवत्ता और मानकों पर खरी होना अधिक आवश्यक हो जाता है। दूसरी और अत्यधिक एंटिबायोटिक लिखने और सेवन को भी नियंत्रित किया जाना जरुरी हो जाता है। ऐसा नहीं है कि सरकार इन हालातों से अनजान है बल्कि सरकार गंभीर प्रयास करने के साथ ही सख्त कानूनी प्रावधानों की दिशा में बढ़ रही है। दवाओं के पैकिंग पर असली नकली की पहचान के लिए क्यूआर कोड लगाने जैसी कदम उठा रही हैं पर निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरने वाले बैच की दवाओं को उपयोग से बाहर करने के सीमित कदम के स्थान पर निर्माता पर सख्त से सख्त कार्रवाई के प्रावधान होने ही चाहिए। ऐसे मामलों में न्यायालयों को भी सख्ती का संदेश देना चाहिए ताकि किसी को अनजाने में किसी की गलती से जीवन से हाथ नहीं धोना पड़े।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

जलवायु परिवर्तन से उपजे संकट
जब मौसम बदलता है, तो पूरा गांव बदल जाता है

मणिमाला शर्मा

राजस्थान में जलवायु परिवर्तन अब सिर्फ मौसम विभाग की रिपोर्ट का विषय नहीं रहा, यह ठाामीण जीवन की हकीकत बन चुका है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य में वर्षा का कुल स्तर थोड़ा बढ़ा है, लेकिन उसका वितरण पूरी तरह असंतुलित हो गया है। मानसून के कुछ ही दिनों में पूरे सीजन जितनी बारिश गिर जाना और फिर लंबे सूखे दौर का सामना करना अब आम बात बन चुकी है। इसी कारण राजस्थान के कई जिलों को एक ही वर्ष में बाढ़ और सूखे दोनों का सामना करना पड़ रहा है।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले दशक में औसत तापमान में स्पष्ट वृद्धि हुई है। विशेषकर जून-जुलाई के महीनों में हीटवेव के दिन बढ़ गए हैं। इसका असर खेतों में काम करने के घंटों, फसलों की वृद्धि और पशुओं की सेहत पर साफ दिखाई दे रहा है। पशुपालन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, बढ़ती गर्मी और चारे की कमी के कारण कई इलाकों में दूध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत तक कमी आई है। प्रदेश की भूजल रिपोर्टें भी दर्शाती हैं कि राजस्थान के लगभग 85 प्रतिशत भूजल ब्लॉक अत्यधिक दोहन की श्रेणी में आ चुके हैं। यानी बारिश होने के बावजूद पानी की स्थायी उपलब्धता अब गंभीर चुनौती बन गई है।

गांवों की जमीनी तस्वीर और भी चिंताजनक है। नाथूबसर (चूरू), पिपलोदी (झालावाड़), सांचौर और चितलवाना (पश्चिमी राजस्थान) जैसे गांवों में किसान अब अपने अनुभव और परंपरागत ज्ञान पर भरोसा नहीं कर सकते। लालचंद पूनिया (नाथूबसर) कहते हैं, पहले सावन में बारिश तय रहती थी, अब कब बरस पड़े और कब गायब हो जाए, कोई भरोसा नहीं। खेती अब किस्मत पर चल रही है। रामकुमार नागर (पिपलोदी) बताते हैं, सात-आठ साल में पहली बार इतना नुकसान देखा। या तो बारिश बंद रहती है या पूरे सीजन जितना पानी एक ही बार में गिर जाता है। पवनसिंह देवड़ा (सांचौर) कहते हैं, पहले आकाश देखकर अंदाजा लगा लेते थे, अब मौसम अचानक बदल जाता है। फसल कितनी बचेगी, पता नहीं।

खेती के संकट के साथ-साथ पशुपालन भी गहरी चुनौती बन चुका है। नागौर, बाड़मेर और चूरू में घास की कमी, अनियमित बारिश और तेज गर्मी ने पशुओं की सेहत प्रभावित की है। दूध उत्पादन घटा है और कई छोटे पशुपालक अपने पशुओं की संख्या कम करने को मजबूर हो गए हैं। मदनलाल नाई (रतनगढ़, चूरू) बताते हैं, पहले चारागाह हरे रहते थे। अब बारिश कम या अचानक ज्यादा होने से घास ठीक से नहीं उगती। बाहर से चारा खरीदना पड़ता है। इससे लागत बढ़ रही है और आमदनी घट रही है।

इस बार राजस्थान के दक्षिणी जिलों, जैसे उदयपुर और गोगुंदा, में बारिश अच्छी हुई है, लेकिन तेज बारिश और मिट्टी कटाव ने चरागाहों और छोटे तालाबों को प्रभावित किया है। इसका असर पशुपालन और मवेशियों की संख्या पर साफ दिखाई दे रहा है। किसानों का कहना है कि यह असमान वितरण उनकी आर्थिक सुरक्षा को डगमगा रहा है।

जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा, लेकिन अदृश्य असर महिलाओं पर पड़ रहा है। राज्य में पीने के पानी की समस्या पहले से ही भयावह है। ऐसे में बाड़मेर, जैसलमेर और टोंक में महिलाएं पहले से ज्यादा दूरी तय कर पानी ला रही हैं। पशुधन के चारे की दिक्कत और रोजगार की कमी ने पुरुषों का पलायन बढ़ा दिया है। इसके कारण खेत और घर दोनों की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई है। कमला देवी (उनियारा, टोंक) कहती हैं, पहले एक चक्कर में पानी मिल जाता था। अब दो-तीन बार जाना पड़ता है। गर्मी बढ़ने से यह काम और मुश्किल हो गया है।

बार-बार खराब होती फसलें, बढ़ती लागत और घटती पैदावार ने किसानों को कर्ज और मानसिक दबाव के दायरे में ला दिया है। झालावाड़ और कोटा के किसान बताते हैं कि एक खराब सीजन अगले साल को संभालना मुश्किल बना देता है। हेमराज मीणा (झालावाड़) कहते हैं, कर्ज पहले भी था, लेकिन अब डर बढ़ गया है। मौसम कब साथ छोड़ दे, कोई नहीं जानता।

राजस्थान में पानी की स्थिति समय के साथ और अधिक गंभीर होती जा रही है। कई जिलों में अच्छी बारिश के बावजूद भूजल स्तर में स्थायी सुधार नहीं हो पा रहा है। तालाब, जोहड़ और पारंपरिक जल संरचनाएं कमजोर हो रही हैं। इसका असर सीधे गांव की महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है। स्थानीय स्तर पर कुछ पंचायतें तालाब, जोहड़ और चेक डैम बनाकर जल संचयन कर रही हैं। रेनवाटर हार्वेस्टिंग, ड्रिप सिंचाई और फसल विविधीकरण के प्रयास भी शुरू हो रहे हैं। फिर भी योजनाओं का लाभ सीमित है।

राजस्थान का ग्रामीण परिदृश्य साफ संकेत देता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान का संकट है। मौसम बदल चुका है। अब हमारी सोच, नीति और तैयारी को भी उसी के अनुसार बदलना होगा।

–मणिमाला शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

अच्छा साहित्य समाज में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है : राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े

■ अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में साहित्यकार रवि पुरोहित को राज्यपाल बागड़े ने सम्मानित किया

बीकानेर, (निसं)। पीएमश्री अशोक शर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लालसोट में आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि अच्छा साहित्य समाज में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है और विद्रूपताओं को मिटाता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है, जो समाज को नई दिशा एवं सोच देता है। यह समाज को सोचने पर मजबूर करता है। उन्होंने साहित्य के भाव को स्पष्ट करते हुए कहा कि साहित्य में सबका हित निहित होता है। इसका मूल तत्व सबका हित साधना है। उन्होंने कबीर एवं रहीम के साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज सुधारने का संदेश दिया, जो रूढियों एवं बुराइयों का प्रतिकार करता है। उन्होंने मैथिली शरण गुप्त एवं वाल्मीकि की ओर से साहित्य के माध्यम से समाज को दिए योगदान का भी जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि देश की आजादी से पहले विदेशियों ने हमारे देश का काफी झूठा इतिहास भी लिखा है, जिसे सुधारने की जरूरत है। उन्होंने इसे आधुनिक साहित्यकारों की जिम्मेदारी बताते हुए कहा कि आप ऐसे विकृत इतिहास को खोजें और सुधारें। इससे पूर्व राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े एवं अन्य अतिथियों ने अनुराग सेवा संस्थान के 31 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय अनुराग साहित्य अलंकरण समारोह में बीकानेर के साहित्यकार रवि पुरोहित को उनकी काव्य कृति 'आग अभी शेष है' के लिए शकुंतला देवी रावत स्मृति अनुराग साहित्य सम्मान सहित विभिन्न राज्यों से चयनित 31 साहित्यकारों को शॉल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न एवं सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर रवि पुरोहित ने कहा कि पुरस्कार व सम्मान साहित्यकार की सामाजिक जिम्मेदारी का विस्तार करते हैं। साहित्य मनुष्य को केवल मनोरंजन नहीं देता, यह मानसिक व बौद्धिक विकास का सूत्र बीज और विद्रूप के प्रतिकार हेतु चेतना का अमोघ अस्त्र सौंपता है। संवेदना का विकास नव समाज के निर्माण में साहित्य की सबसे बड़ी देन है।

शिविर में वर्षों पुरानी समस्या सुलझी

■ रास्ता लंबे समय से प्रचलन में था, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में कटान दर्ज नहीं होने से ग्रामीणों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था

सीकर, (निसं)। ग्राम पंचायत मुख्यालय शाहपुरा, तहसील धोद में आयोजित ग्रामीण समस्या समाधान शिविर-2025 ग्रामीणों के लिए आशा और राहत की किरण बनकर सामने आया। वर्षों से चली आ रही एक गंभीर समस्या, जो रोज़मर्रा के जीवन को प्रभावित कर रही थी, उसका समाधान इस शिविर में कुछ ही मिनटों में हो गया। ग्राम शाहपुरा के लगभग 25-30 परिवारों के लिए एक रास्ता जीवनरेखा के समान था। यह रास्ता लंबे समय से प्रचलन में था, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में कटान दर्ज नहीं होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। कई बार प्रयासों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा था। शिविर के दौरान मूलचन्द पुत्र भूराराम, छोटु पुत्र धुकलराम सहित लगभग 20 ग्रामीणों ने अपनी समस्या शिविर प्रभारी के समक्ष रखी। हल्का पटवारी मूलचन्द जाट ने मौके पर ही निरीक्षण कर मात्र 15 मिनट में रास्ते का प्रस्ताव तैयार कर दिया। तहसीलदार धोद भरतदान द्वारा प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया गया। इस त्वरित कार्यवाही से ग्रामीणों के चेहरों पर खुशी साफ दिखाई दी। जिस समस्या ने वर्षों तक परेशान किया, उसका समाधान एक ही शिविर में हो जाना सरकार की जन समस्या समाधान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ग्रामीणों ने इस सफल पहल के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं क्षेत्रीय विधायक गोवर्धन वर्मा का आभार व्यक्त किया और आशा जताई कि भविष्य में भी ऐसे शिविर आयोजित होते रहेंगे, जिससे आमजन की समस्याओं का समाधान समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से हो सके।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 22 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मंगलवार प्रातः 5:32 तक, ध्रुव योग सायं 4:40 तक, कौलव करण दिन 10:52 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 11:07 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-धनु, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज से राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ होगा। रज्जब मु.मास 7 आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:33 तक, शुभ 9:51 से 11:08 तक, चर 1:42 से 3:00 तक, लाभ-अमृत 3:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 5:34 तक

मेष
अपने अति व्यावसायिक आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आज धार्मिक-मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

सिंह
घर-परिवार में अनावश्यक वाद-विवाद हो सकता है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। खान-पान का ध्यान रखें। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।